गद्य भाग

अध्याय 11

भक्तिन

महादेवी वर्मा

अपने गद्य में गहरे सामाजिक सरोकार को स्थान देने वाली तथा समाज के शोषित-पीड़ित तबके को नायकत्व प्रदान करने वाली लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा रचित प्रस्तुत पाठ में सेविका के व्यक्तित्व को चित्रित करते हुए उसके संघर्षपूर्ण जीवन को मार्मिकता के साथ उद्घाटित किया गया है। इसमें उसके व्यवहार और स्वभाव का भी वर्णन हुआ है, जो परिस्थितिवश अक्खड़ हो गया है। उसके रहन-सहन और पहनावे के कारण लेखिका ने उस सेविका को भक्तिन नाम से संबोधित किया है।

'भक्तिन' महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है, जो 'स्मृति की रेखाएँ' में संकलित है। लेखिका ने अपनी सेविका के संघर्षशील, स्वाभिमानी एवं कर्मठ जीवन का अत्यंत संवेदनशील चित्रण किया है और इसी क्रम में लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए आयाम भी उद्घाटित होते गए हैं। महादेवी के प्रति अनमोल आत्मीयता से भरी भक्तिन के बहाने स्त्री-अस्मिता की संघर्षपूर्ण आवाज के रूप में इस पाठ को देखा जाना चाहिए।

पाठ का सार

भक्तिन के व्यक्तित्व का चित्रण

भक्तिन छोटे कद व दुबले शरीर की एक गाँव में रहने वाली स्त्री थी। छोटी आँखें, पतले होंठ तथा सदैव गले में कंठी की माला पहनने वाली इस भक्तिन का असली नाम लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था, लेकिन वह अपने नाम के ठीक विपरीत थी। इसलिए उसने लेखिका को भी अपना नाम प्रयोग में लाने के लिए मना कर दिया था। संभवतः उसकी कंठी माला को देखकर ही लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रखा होगा।

भक्तिन की सौतेली माँ

झूँसी गाँव में एक प्रसिद्ध योद्धा की लड़की लक्ष्मी का पालन-पोषण उसकी सौतेली माँ ने किया था। उसकी शादी 5 वर्ष की आयु में तथा गौना 9 वर्ष की आयु में ही हँड़िया गाँव के एक संपन्न गोपालक के छोटे पुत्र के साथ करा दिया गया था। विमाता को यह डर हमेशा सताता रहता था कि लक्ष्मी के पिता कहीं सारी जायदाद उसके नाम ही न कर दें। इसलिए लक्ष्मी के पिता जब गंभीर रूप से बीमार पड़े तो इसकी सूचना लक्ष्मी को नहीं दी गई। अतः पिता की मृत्यु का दुःखद समाचार उसे मायके आकर ही मिला। सौतेली माँ का बुरा व्यवहार देखकर उसने मायके में पानी भी नहीं पिया और ऐसे ही ससुराल लौट आई। उसने अपने पिता की मृत्यु का भीषण दुःख अपने पति को कड़वे वचन कहकर व्यक्त किया।

लक्ष्मी का विवाहित जीवन

ससुराल में भी भक्तिन को अब तक की भाँति दुःख ही मिला। सास के तीन कमाने वाले बेटे थे। लक्ष्मी सबसे छोटे बेटे की पत्नी होने के कारण अपनी बेटियों सहित घर का सारा काम करती थी और जिठानियाँ अपने पुत्रों के साथ मौज-मस्ती से उस घर में रहती थीं। लक्ष्मी की तीन बेटियाँ थीं। बड़ी बेटी के विवाह के उपरांत ही भक्तिन के पति का देहांत हो गया। अपनी संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए उसने अपनी बेटियों का विवाह कम उम्र में ही कर दिया। जायदाद के लिए उनके परिवार में लड़ाई-झगड़ा चलता ही रहता था, इसलिए उसने अपने बड़े दामाद को घरजमाई बना लिया। लेकिन भक्तिन का दुर्भाग्य जैसे उसके साथ-साथ चलता हो, वाली कहावत उसके साथ इसलिए ठीक बैठती है क्योंकि

Scanned with CamScanner

शीघ्र ही उसके बड़े दामाद का भी निधन हो गया और वह फिर दुःखों से घिर गई। जेठ के लड़के का साला लक्ष्मी की बड़ी बेटी से शादी करने की ज़िद में जबरदस्ती घर में घुस गया, तो बड़ी लड़की ने उसे अच्छी तरह पीटा। उस युवक ने सभी से झूठ बोला कि इसी लड़की ने मुझे बुलाया था। उसकी बातों में आकर पंचायत ने भी उन्हें पति-पत्नी की तरह साथ रहने का निर्णय सुना दिया। उन्हें दुःखी होकर भी पंचायत का निर्णय मानना पड़ा, किंतु अब घर में गरीबी रहने लगी, झगड़ा होने लगा तथा लगान समय पर न चुका पाने के कारण भक्तिन को दिन भर धूप में खड़े रहने का दंड सहना पड़ा। इस अपमान और कलंक को भक्तिन सह न सकी और वह कमाने के उद्देश्य से शहर में आ गई।

भक्तिन का शहरी जीवन

शहर में भक्तिन लेखिका के पास रहकर उसके घर का काम आदि करने लगी। सुबह के समय भक्तिन नहाकर लेखिका की धुली धोती पहनकर दो मिनट जप करती और सूर्य एवं पीपल को अर्घ्य देती, फिर खाना बनाती। भक्तिन दूसरों को तो अपने जैसा बनाने को तैयार रहती, परंतु स्वयं को बदलने के लिए तैयार नहीं थी। इसलिए उसने लेखिका को गाँव में खाए जाने वाले साधारण भोजन की विशेषताएँ बताईं। वह गाँव की भाँति लेखिका को 'ओए' कहकर ही बुलाती थी।

भक्तिन के तर्क-वितर्क करने संबंधी गुण

लेखिका जब रुपयों को इधर-उधर रख देती थी, तब भक्तिन उन्हें इकट्ठा कर मटकी में डाल देती थी और लेखिका के पूछने पर वह शास्त्रार्थ करती हुई कहती कि रुपयों को उसने सँभालकर रख दिया। इसी प्रकार उसने सिर मुड़वाने की बात पर लेखिका से कहा कि सिद्ध सिर मुड़वाकर तीर्थ जाते हैं। लेखिका के हस्ताक्षर करने वाले नियम पर भक्तिन ने बड़े तर्क के साथ उनकी यह बात टाल दी कि यदि वह पढ़ने लगी तो घर गृहस्थी कौन देखेगा?

लेखिका के प्रति भक्तिन का सेवा भाव

लेखिका के साथ भक्तिन हर समय उपस्थित रहती थी, जिससे लेखिका को जिस किसी भी चीज़ की आवश्यकता हो तो वह उसकी मदद कर सके। वह लेखिका के साथ बद्रीनाथ व केदारनाथ भी गई थी। भक्तिन की बेटी और दामाद जब बुलाने आए तो वह लेखिका को छोड़ने का मन न बना पाई। लेखिका के सामने भक्तिन ने धन के महत्त्व को भी कम कर दिया। वह लेखिका के लिए अपना सब-कुछ लुटाने को तैयार थी।

भक्तिन और लेखिका के गूढ़ संबंध

इन दोनों के बीच स्वामी और सेविका का संबंध न रहकर आत्मिक संबंध विकसित हो गए थे। भक्तिन लेखिका के परिचितों का सम्मान लेखिका की इच्छानुसार ही करती थी। भक्तिन छात्रावास की बालिकाओं को चाय इत्यादि बनाकर देती थी। लेखिका चाहकर भी भक्तिन को अपने से दूर नहीं कर पाई। भक्तिन लोगों के लंबे बाल और अस्त-व्यस्त वेशभूषा देखकर टीका-टिप्पणी भी करती थी। इस प्रकार भक्तिन और लेखिका के बीच अत्यंत गूढ़ संबंध स्थापित हो चुके थे।

शब्दार्थ मार्मिक – अंतरंग; विमाता – सौतेली माँ; जायदाद – जमीन, धन; भीषण दुःख – अत्यधिक दुःख; कड़वे वचन – बुरे लगने वाले शब्द; दुर्भाग्य – बुरा भाग्य; शास्त्रार्थ – शास्त्रों से संबंधित अर्थ; आत्मिक संबंध – आत्मा-का-आत्मा से संबंध; परिचित – जान-पहचान वाले; गूढ़ – घनिष्ठ; तुम पचै – तुम लोगों से; दुर्वह – जिसे ढोना कठिन हो; अलगौझा – बँटवारा; राब – गन्ने का पका हुआ गाढ़ा रस; दुर्लंघ्य – जिसे पार करना कठिन हो; कुंचित – सिकुड़ी हुई; तुषारपात–ओले बरसाना; हतबुद्धि–जिसकी बुद्धि या सोचने-विचारने की शक्ति मारी गई हो; नैहर–मायका; विधात्री–जन्म देने वाली माँ; पुरखिन – बुजुर्ग महिला; जिठौत – जेठ का पुत्र; अजिया ससुर – पति का दादा; भइयहू – छोटे भाई की पत्नी; होरहा – हरे अनाजों का आग पर भुना रूप; अभिषिक्त – स्थापित होना, अधिकार प्राप्त; औटना – गर्म करके गाढ़ा करना; परिमार्जन – शुद्ध करना, सुधार करना; अथ – प्रारंभ; वीतराग – अनासक्ति या आसक्ति रहित; नापित – नाई; पटु – चतुर; विस्मित – आश्चर्यचकित; प्रशांत – पूरी तरह शांत; शेष इतिवृत्त – संपूर्ण कथा; वय – आयु; अमरौती – अमरता

Scanned with CamScanner

पाठ्यपुस्तक (आरोह भाग-2) के प्रश्नोत्तर

1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा? **AI 2008**

HOTS

उत्तर 'भक्तिन' का असली नाम लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था। लक्ष्मी का अर्थ है–धन की देवी, लेकिन उसकी दशा अपने नाम से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। उसके जीवन में धन का घोर अभाव था। इसलिए वह अपना असली नाम किसी को नहीं बताती थी। उसे यह नाम शायद उसके पिता ने दिया होगा क्योंकि हमारे समाज में लड़की का पैदा होना लक्ष्मी (धन) का आना माना जाता है।

2. दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?

HOTS

अथवा

दो कन्याओं को जन्म देने के बाद भी भक्तिन पुत्र की इच्छा में अंधी अपनी जिठानियों की घृणा एवं उपेक्षा की पात्र बनी रही। इस प्रकार के उदाहरण भारतीय समाज में अभी भी देखने को मिलते हैं। इसका कारण और समाधान प्रस्तुत कीजिए। **AI 2008**

उत्तर भारत एक पुरुष प्रधान देश रहा है। मध्यकालीन भारत में तो बेटियों को बोझ समझा जाता था। समाज में आज भी होने वाली कन्या-भ्रूण हत्या की घटनाएँ इसी मनोवृत्ति का प्रमाण देती हैं। साथ ही यह माना जाता है कि बेटी का विवाह करने पर वह तो दूसरे घर की हो जाती है, जबकि उनमें बेटे से अपने वंश को आगे बढ़ाने की इच्छा बनी रहती है। पुत्र को बुढ़ापे की लाठी माना जाता है और अंतिम समय में उनसे माँ-बाप की सेवा की उम्मीद भी की जाती है। ऐसे ही दकियानूसी विचार हमारे समाज में आज भी व्याप्त हैं। इसी कारण भक्तिन भी पुत्र की महिमा में अंधी जिठानियों की घृणा एवं उपेक्षा की पात्र बनी रही।

3. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें, इसकी स्वतंत्रता) को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे? **AI 2008**

HOTS

उत्तर भक्तिन की बेटी पर पंचायत ने जबरन पति थोप दिया था। यह कार्य स्त्रियों के मानवाधिकारों के विरुद्ध है। नारी पर प्राचीनकाल से ही हर फैसला जबरदस्ती लागू कर दिया जाता है। विवाह जैसे गंभीर निर्णय भी वह अपनी मर्जी से नहीं ले सकती। लड़की को माता-पिता की इच्छा से ही विवाह करना पड़ता है और यदि वह विरोध करती है, तो उसे समाज से बाहर कर दिया जाता है। उसे अपनी पसंद और इच्छा के अनुसार अपने जीवनसाथी का चुनाव करने का भी अधिकार नहीं दिया जाता। यही भक्तिन की बेटी के साथ भी हुआ।

4. 'भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं', लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

अथवा

'भक्तिन अच्छी है पर उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।' इस कथन के समर्थन में तीन तर्क दीजिए।

Delhi 2012; AI 2010, 2009

उत्तर भक्तिन अच्छी है, पर उसके दुर्गुणों को तीन तर्कों के आधार पर बताया गया है, जैसे–वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं है। वह रुपयों-पैसों को मटकी में रख देती है और पूछने पर बताती है कि उसने उन्हें सँभाल कर रखा हुआ है। वह लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बात को इधर-उधर घुमाकर कहती है। इसे आप झूठ कह सकते हैं। भक्तिन सभी बातों और कामों को अपनी सुविधा के अनुसार ढालने में निपुण है, जो कई बार दूसरों को नापसंद होता है।

5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर लेखिका ने बताया कि उसे स्त्रियों का सिर मुड़ाना अच्छा नहीं लगता था, इसलिए उसने उसे रोकना चाहा तो भक्तिन ने शास्त्र का उदाहरण देते हुए कहा कि 'तीर्थ गए मुड़ाए सिद्ध' अर्थात् सिद्ध लोग सिर मुड़वाकर तीर्थ करने गए। कौन से शास्त्र का यह रहस्यमय सूत्र है, यह जान लेना लेखिका के लिए संभव नहीं था। अतः वह चुप हो गई। यही उदाहरण लेखिका ने भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा के अनुसार सुलझाने के लिए दिया है।

6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं? **AI 2008**

उत्तर भक्तिन गाँव में रहते हुए भी इस गुण से परिपूर्ण थी कि वह दूसरों को अपने मन के अनुसार बना लेती थी। उसके इस गुण का प्रभाव लेखिका पर भी पड़ा। अब लेखिका ने भी गाँव के लगभग सभी संस्कारों को अपना लिया था। वह भक्तिन द्वारा सब सीख चुकी थी। भक्तिन ने रात को मकई का बना दलिया सवेरे मट्ठे के साथ, बाजरे के तिल लगे रात के बचे हुए पुए, ज्वार के भूने हुए भुट्टे के हरे दाने की खिचड़ी आदि खिलाकर तथा उनके गुणों का वर्णन करके लेखिका को भी देहाती बना दिया था।

Scanned with CamScanner

(प्रत्येक 2 × 4 = 8 अंक)

r दीजिए

2\. पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिनों से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गईं। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दु:ख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।

प्रश्न

(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ व उसके रचनाकार का नाम लिखिए। (2)

(ख) पिता की मृत्यु का समाचार भक्तिन को उसकी सौतेली माँ ने कब भेजा और क्यों? (2)

(ग) 'उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए'– पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (2)

(घ) क्या कारण था कि भक्तिन शीघ्र ही अपने मायके से ससुराल आ गई? (2)

उत्तर

(क) प्रस्तुत गद्यांश 'भक्तिन' पाठ से लिया गया है, जो महादेवी वर्मा द्वारा रचित है।

(ख) पिता अपनी बेटी लछमिन अर्थात् भक्तिन से बहुत प्रेम करते थे, किंतु उसकी सौतेली माँ ईर्ष्यालु स्वभाव की थी। इसी कारण उसे डर था कि कहीं भक्तिन के पिता अपनी सारी संपत्ति बेटी के नाम न कर दें। इसी डर से उसकी सौतेली माँ ने न तो उनकी बीमारी की सूचना भेजी और न ही मृत्यु का संदेशा ही समय पर दिया।

(ग) भक्तिन की सास ने कहा कि बहुत दिनों से वह मायके नहीं गई है, इसलिए मायके जाकर वह अपने पिता को देख आए। वह शीघ्र ही अपने मायके पहुँचना चाहती थी, परंतु गाँव की सीमा में प्रवेश करते ही उसे किसी अनहोनी का आभास हो गया था। गाँव की सीमा में घुसते ही उसने इन शब्दों को बार-बार सुना कि 'हाय लछमिन अब आई'। यह सुनकर उसे किसी अनहोनी की आशंका प्रबल हो गई थी।

(घ) मायके में पहुँचकर ही उसे अपने पिता की मृत्यु का समाचार मिला। गाँव वालों ने भक्तिन को ताना मारा कि वह पिता की मृत्यु के इतने दिनों बाद अब आई है। इसके साथ ही सौतेली माँ ने भी कटु वचन कहे, जिन्हें सुनते ही वह अपने मायके से बिना पानी पिए ही अपनी ससुराल लौट आई।

Scanned with CamScanner

4. इस दंड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति, उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं; पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। उसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगौझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी, इसीलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न

(क) 'चुगली-चबाई की परिणति, उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी'– इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। **(2)**

(ख) टकसाल किसे कहा जाता है? 'खोटे सिक्कों की टकसाल' कहकर किस पर व्यंग्य किया गया है? **(2)**

(ग) भक्तिन के पति का उसके प्रति इतना अधिक प्रेम क्यों था? **(2)**

(घ) भक्तिन का ज्ञान किस क्षेत्र में बढ़-चढ़कर था? **(2)**

उत्तर

(क) भक्तिन की जिठानियाँ और सास प्रायः भक्तिन के पति के सामने उसकी चुगली यानि शिकायत किया करती थीं। वे चाहती थीं कि भक्तिन की भी पिटाई हो, परंतु भक्तिन के पति पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता था। वह भक्तिन को और अधिक चाहने लगता था।

(ख) जिस स्थान पर सिक्कों का निर्माण होता है, वह स्थान टकसाल कहलाता है। 'खोटे सिक्कों की टकसाल' कहकर लेखिका ने समाज पर व्यंग्य किया है।

(ग) भक्तिन का पति भक्तिन को उसके गुणों के कारण प्रेम करता था। वह परिश्रमी तथा तेजस्विनी थी। उसका पति उससे सच्चा प्रेम करता था, क्योंकि लड़कियाँ पैदा होने के बाद भी उसके प्रेम में कोई कमी नहीं आई।

(घ) भक्तिन का ज्ञान गाय, भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में बहुत अधिक था। इस ज्ञान के फलस्वरूप ही वह आर्थिक रूप से समृद्ध थी।

Scanned with CamScanner

6. उसने ससुर, अजिया ससुर और जाने कई पीढ़ियों के ससुरगणों की उपार्जित जगह-जमीन में से सुई की नोक बराबर भी देने की उदारता नहीं दिखाई। इसके अतिरिक्त गुरु से कान फुँकवा, कंठी बाँध और पति के नाम पर घी से चिकने केशों को समर्पित कर अपने कभी न टलने की घोषणा कर दी। भविष्य में संपत्ति सुरक्षित रखने के लिए उसने छोटी लड़कियों के हाथ पीले कर उन्हें ससुराल पहुँचाया और पति के चुने हुए बड़े दामाद को घरजमाई बनाकर रखा। इस प्रकार उसके जीवन का तीसरा परिच्छेद आरंभ हुआ।

प्रश्न

(क) भक्तिन ने किस क्षेत्र में उदारता का व्यवहार नहीं किया? (2)

(ख) भक्तिन ने अपने पति की मृत्यु के बाद अपने विषय में क्या निर्णय लिया? (2)

(ग) 'हाथ पीले करने' से क्या आशय है तथा किसने किसके हाथ पीले किए? (2)

(घ) 'तीसरे परिच्छेद' से क्या आशय है? (2)

उत्तर

(क) भक्तिन ने अपने ससुर, अजिया ससुर और न जाने कितनी पीढ़ियों के ससुरगणों की उपार्जित जमीन में से सुई की नोक के बराबर भी जमीन न देने की ठान ली थी। इस क्षेत्र में उसने उदारता का व्यवहार नहीं किया।

(ख) अपने पति की मृत्यु के बाद भक्तिन ने गुरु से कान फुँकवाया अर्थात् गुरु मंत्र लिया और गले में कंठी भी बाँधी तथा पति के नाम पर घी से चिकने बालों को समर्पित करके जीवन को ऐसा ही व्यतीत करने का निर्णय लिया।

(ग) 'हाथ पीले करने' से आशय विवाह करवाना है। भक्तिन ने अपनी दोनों छोटी लड़कियों के हाथ पीले किए।

(घ) लेखिका ने भक्तिन के जीवन को तीन परिच्छेदों (भागों) में बाँटा है। पहला परिच्छेद विवाह पूर्व अपने पिता के घर पर व्यतीत किया गया समय था, जबकि दूसरे परिच्छेद से तात्पर्य विवाहित जीवन के व्यतीत समय से है। तीसरा परिच्छेद पति की मृत्यु के उपरांत विधवा जीवन से संबंधित है।

Scanned with CamScanner

उत्तर

(ङ) भक्तिन के प्रसन्नता से बनाए गए भोजन को देखकर लेखिका ने उसके उत्साह पर ठंडा पानी फेरते हुए कहा कि यह क्या बनाया है? अतः अपने भोजन को सही बताते हुए भक्तिन ने लेखिका को सारगर्भित लेक्चर दिया।

(ख) भक्तिन ने लेखिका को अपनी पाक-कुशलता के संदर्भ में कई मौखिक प्रमाण-पत्र, जो उनके सास-ससुर ने दिए थे, समझा दिए तथा यह बता दिया कि वह अनाड़ी व फूहड़ नहीं है।

(ग) लेखिका ने भक्तिन के तर्कों से सहमत होकर मोटी रोटी रूखी दाल के साथ खा ली, क्योंकि उसे मीठे से लगाव नहीं था तथा घी में रुचि समाप्त हो गई थी।

(घ) देहात में भोजन चटनी, गुड़ तथा छाछ आदि से भी खा लिया जाता है, परंतु शहर में सब्जी, दाल, कोल्ड ड्रिंक, कॉफी, फास्ट फूड आदि खाया जाता है। देहाती जीवन सरलता को अपने में समाए हुए होता है, परंतु शहरी जीवन चिंताओं और असुविधाओं से भरा हुआ होता है।

9. सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है—नाम है लछमिन अर्थात् लक्ष्मी, पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। **Delhi 2010, 2009**

प्रश्न

(क) भक्तिन का वास्तविक नाम व उस नाम का अर्थ बताइए। (2)

(ख) भक्तिन समझदार है। ऐसा लेखिका क्यों मानती है? (2)

(ग) भक्तिन नौकरी की खोज में क्यों आई? (2)

(घ) 'शेष इतिवृत्त' से आप क्या समझते हैं? (2)

उत्तर

(क) भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था, जो संपत्ति की स्वामिनी का सूचक है।

(ख) भक्तिन अपना लक्ष्मी नाम किसी को नहीं बताती, क्योंकि इस नाम की गुणवत्ता का असर उसके जीवन में कहीं भी दिखाई नहीं देता। लेखिका के अनुसार जीवन में प्रायः सभी को अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, परंतु भक्तिन अपना वास्तविक नाम किसी को नहीं बताती। इसलिए वह भक्तिन को समझदार समझती है।

(ग) भक्तिन के पति की मृत्यु के बाद पारिवारिक और सामाजिक विषमताओं ने उसके सामने चुनौतियाँ खड़ी कर दी थीं। एक बार भूमि का लगान समय पर न चुका पाने के कारण उसे अपमानित होना पड़ा, इसी कारण उसे शहर में नौकरी ढूँढने जाना पड़ा।

(घ) 'शेष इतिवृत्त' का अर्थ है, संपूर्ण वर्णन। भक्तिन ने अपने जीवन के आरंभ से अब तक का पूरा वृत्तांत लेखिका को बता दिया था।

10. जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने। **AI 2009**

प्रश्न

(क) वह 'देहातिन' कौन थी? उसने अपने नाम का उपयोग न करने की प्रार्थना लेखिका से क्यों की? (2)

(ख) 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है' कैसे? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए–'लक्ष्मी की समृद्धि कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी।' (2)

(घ) लेखिका और उसके घर में काम करने वाली भक्तिन के वास्तविक नामों में ऐसा क्या विरोधाभास था, जिसे लेकर दोनों को जीना पड़ रहा था? (2)

उत्तर

(क) वह देहातिन अर्थात् भक्तिन महादेवी के यहाँ काम करने वाली एक सेविका थी। उसने लेखिका से अपने वास्तविक नाम लक्ष्मी का उपयोग न करने की प्रार्थना की क्योंकि वह अपने नाम के अनुरूप नहीं थी। उसका नाम समृद्धिसूचक था और वह गरीब थी। अतः लोग उसका मजाक उड़ा सकते थे।

(ख) लक्ष्मी अपने नाम के अनुरूप समृद्ध नहीं थी। इस पंक्ति से यही आशय निकलता है कि उसका नाम लक्ष्मी था, पर वह दरिद्रता के साथ ही जीवन व्यतीत करती थी। इसलिए वह अपना नाम किसी को नहीं बताती थी। वह लेखिका से भी इस नाम का प्रयोग न करने के लिए प्रार्थना करती है।

(ग) लक्ष्मी के भाग्य में जीवनभर गरीबी में रहना ही लिखा है, यद्यपि उसका नाम लक्ष्मी है। इस पंक्ति से यही आशय निकलता है कि जो उसकी किस्मत में लिखा है, वह उसका नाम नहीं बदल सकता। वह अपने नाम के अनुरूप अपनी किस्मत को समृद्धिशाली नहीं बना सकी।

(घ) लेखिका और भक्तिन दोनों के नाम में विरोधाभास था। भक्तिन का असली नाम लक्ष्मी था, परंतु वह उसके अनुरूप समृद्ध न होकर दरिद्र थी। दूसरी ओर लेखिका अपने नाम के अनुरूप कोई महान् देवी न होकर, साधारण नारी थी।

Scanned with CamScanner

11. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती; पर 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। मेरे इधर-उधर पड़े रुपये-पैसे भंडार-घर की किसी मटकी में कैसे अंतरहित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर, उस संबंध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे डालती है, जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए संभव नहीं। यह उसका अपना घर ठहरा, रुपया-पैसा जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! उसके जीवन का परम कर्त्तव्य मुझे प्रसन्न रखना है। जिस बात से मुझे क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर इधर-उधर करके बताना, क्या झूठ है! इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो वे भगवान जी को कैसे प्रसन्न रख सकते और संसार को कैसे चला सकते!

Delhi 2008

प्रश्न

(क) 'नरो वा कुंजरो वा' किसके द्वारा कहा गया वाक्यांश है? भक्तिन का मूल लक्ष्य क्या था? (2)

(ख) भक्तिन भंडार-घर की मटकी में छिपाकर रखे रुपयों को चोरी क्यों नहीं मानती? (2)

(ग) लेखिका के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन क्या करती थी? (2)

(घ) भक्तिन के अनुसार, संसार चलाने के लिए धर्मराज को क्या करना पड़ा होगा? (2)

उत्तर

(क) 'नरो वा कुंजरो वा' यह वाक्य लेखिका द्वारा भक्तिन के संदर्भ में कहा गया है। भक्तिन का मूल लक्ष्य लेखिका को प्रसन्न रखना था।

(ख) लेखिका अपने रुपये इधर-उधर रख देती है। भक्तिन वही रुपये उठाकर मटकी में सँभालकर रख देती है। इसलिए वह उसे चोरी नहीं मानती।

(ग) भक्तिन के जीवन का परम कर्त्तव्य लेखिका को प्रसन्न रखना है। जब किसी बात से लेखिका को गुस्सा आता, तब भक्तिन उस बात को ही बदलकर इधर-उधर करके बता देती, जिससे लेखिका का क्रोध शांत हो जाए।

(घ) भक्तिन के अनुसार, इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो वे भगवान को कैसे खुश रख सकते और संसार को कैसे चला पाते?

12. भक्तिन के संस्कार ऐसे हैं कि वह कारागार से वैसे ही डरती है, जैसे यमलोक से। ऊँची दीवार देखते ही, वह आँख मूँदकर बेहोश हो जाना चाहती है। उसकी यह कमजोरी इतनी प्रसिद्धि पा चुकी है कि लोग मेरे जेल जाने की संभावना बता-बताकर उसे चिढ़ाते रहते हैं। वह डरती नहीं, यह कहना असत्य होगा; पर डर से भी अधिक महत्त्व मेरे साथ का ठहरता है। चुपचाप मुझसे पूछने लगती है कि वह अपनी कै धोती साबुन से साफ कर ले, जिससे मुझे वहाँ उसके लिए लज्जित न होना पड़े। क्या-क्या सामान बाँध ले, जिससे मुझे वहाँ किसी प्रकार की असुविधा न हो।

प्रश्न

(क) भक्तिन किससे अत्यधिक डरती थी? (2)

(ख) भक्तिन की कमजोरी क्या थी? लोग उसे किस प्रकार चिढ़ाते थे? (2)

(ग) लेखिका के जेल जाने के बारे में जानकर भक्तिन उससे क्या पूछती थी? (2)

(घ) जेल जाने के लिए कितनी धोती साफ कर लें और क्या सामान ले लें–जैसे वाक्य से भक्तिन की किस मानसिकता का पता चलता है? (2)

उत्तर

(क) भक्तिन जेल से अत्यधिक डरती है, ठीक उसी तरह जैसे वह यमलोक से डरती है। इसका कारण यह है कि भक्तिन के संस्कार ही कुछ इस प्रकार के हैं। ऊँची दीवार देखकर ही वह आँख मूँदकर बेहोश हो जाती है।

(ख) भक्तिन जेल जाने की बात से ही डर जाती थी और लोगों ने उसकी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर उसे चिढ़ाना शुरू कर दिया। उसकी इसी कमजोरी को देखकर लोग उसे लेखिका के जेल जाने की संभावना बता-बताकर डराने लगे थे।

(ग) लेखिका के जेल जाने की संभावना से डरकर भक्तिन उनसे यह पूछने लगती है कि वह अपनी कितनी साड़ी ले जाने के लिए धो ले, कौन-कौन सा आवश्यक सामान साथ ले जाने के लिए बाँध ले, जिससे लेखिका को वहाँ किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

(घ) भक्तिन जेल जाने से बहुत डरती थी, लेकिन इसके बावजूद वह अपनी मालकिन अर्थात् लेखिका के लिए जेल जाने से हिचक नहीं दिखाती। जेल में भी लेखिका को कोई कष्ट न हो, इसके लिए वह पर्याप्त तैयारी करके उसे वहाँ भेजना चाहती है। इससे भक्तिन की अपनी मालकिन के प्रति निष्ठा एवं आत्मीयता की मानसिकता झलकती है। लेखिका के प्रति सेवा एवं समर्पण भाव भक्तिन में कूट-कूट कर भरा हुआ है।

13. भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई। भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई। विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता। भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसंद कर दिया। बाहर के बहनोई का आना चचेरे भाइयों के लिए सुविधाजनक नहीं था। अत: प्रस्ताव जहाँ-का-तहाँ रह गया। तब वे दोनों माँ-बेटी खूब मन लगाकर अपनी संपत्ति की देख-भाल करने लगीं और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करने वाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे।

प्रश्न

(क) लेखिका ने भक्तिन के दुर्भाग्य के बारे में क्या बताया है? (2)

(ख) भक्तिन के जेठों का किस उम्मीद पर बल बना? (2)

(ग) क्या कारण था कि भक्तिन की लड़की की दोबारा शादी नहीं हो पाई? (2)

(घ) माँ और बेटी का अंतिम निर्णय क्या था? (2)

Scanned with CamScanner

उत्तर

(क) भक्तिन भरी जवानी में ही विधवा हो गई थी और जब उसकी बड़ी बेटी का विवाह हुआ, तो वह भी जल्द ही विधवा हो गई। भक्तिन की बेटी की दूसरी शादी करवाने के लिए जेठ तथा उसके लड़के ने बहुत ज़ोर लगाए। जेठ के लड़के ने साजिश करके अपने निकम्मे साले के साथ भक्तिन की बेटी की शादी करा दी। इसके बाद भक्तिन के घर में आर्थिक तंगी रहने लगी। इस प्रकार भक्तिन के दुर्भाग्य को लेखिका ने दुःखद बताया है।

(ख) भक्तिन के जेठों को सारी संपत्ति पर अपना अधिकार जमाने की एक किरण दिखाई दी कि भक्तिन की बड़ी लड़की का विवाह बड़े जेठ ने अपने तीतर लड़ाने वाले साले से कराने का विचार किया। यह उनकी अंतिम उम्मीद बन गई थी।

(ग) भक्तिन की लड़की की शादी उसकी समझदारी के कारण नहीं हो पाई क्योंकि, भक्तिन के जिठौत के साले के साथ लड़की के विवाह का प्रस्ताव केवल उनकी संपत्ति पर अधिकार करने के लिए ही आया था। अतः उसने यह बात समझकर वर को नापसंद कर दिया।

(घ) विवाह के प्रस्ताव को ठुकराने के बाद माँ और बेटी का अंतिम निर्णय केवल अपनी संपत्ति की उचित देखभाल करना और उसको अपने ससुराल वालों से बचाकर सँभाले रखना था।

Scanned with CamScanner